जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मा की अरुचि ही अनंतानुबंधी क्रोध है।
- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ - 26

वर्ष : 26, अंक : 5 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

37 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

● विभिन्न स्थानों से पधारे हुये 1132 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित हुये ● प्रशिक्षण में 238 प्रशिक्षणार्थी तथा प्रौढ़ एवं अन्य कक्षाओं में 400 शिक्षार्थी सम्मिलित हुये ● प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक विविध कार्यक्रमों द्वारा प्रतिदिन 13 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई ● 40 विद्वानों द्वारा विविध कार्यक्रमों से समाज लाभान्वित ● 1 लाख 24 हजार 50 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा ● 9 हजार 200 रुपये के प्रवचनों के कैसिट एवं सी. डी. बिकीं ● वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बने।

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आयोजित 37 वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 11 मई से 27 मई तक अनेक सफल आयोजनों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: प्रवचनसार की प्रारंभिक गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके पूर्व कुछ दिन ब्र. यशपालजी जैन एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि का मूल प्रवचन पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा का हुआ।

इसके अतिरिक्त **दैनिक कार्यक्रमों में** प्रतिदिन प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम चलते थे, जिनका संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है - प्रात: 5 बजे से पूज्य गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन, 5.30 से 6.30 बजे तक प्रौढ़ कक्षा, 6.30 से 7.15 बजे तक पूजन-विधान, 7.15 से 8.15 बजे तक प्रशिक्षण कक्षाएँ, 8.15 से 8.45 बजे तक गुरुदेवश्री का सी. डी. प्रवचन, 8.45 से 9.45 बजे तक विशिष्ट प्रवचन, 9.45 से 10.45 बजे तक प्रौढ़ कक्षायें। दोपहर में 1 से 2.30 बजे तक प्रशिक्षणार्थी अभ्यास कक्षायें चलती थीं। 2.30 से 3.15 बजे तक व्याख्यानमाला, 3.15 से 4 बजे तक प्रौढ़कक्षाएँ एवं 4.15 से 5.30 बजे तक प्रशिक्षण कक्षायें चलती थीं। सायं 6.30 से 7.30 बजे तक बाल एवं प्रौढ़ कक्षा, 7.30 से 8.15 बजे तक जिनेन्द्र भक्ति, 8.15 से 10 बजे तक दो प्रवचन होते थे।

शिविर में बालबोध प्रशिक्षण में 185 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें से 161 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 53 विद्यार्थी सम्मिलित हुये, जिसमें 49 ने परीक्षा दी। बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम पुरस्कार परमागम जैन जयपुर एवं अंकित जैन कोलारस, द्वितीय पुरस्कार प्रसन्न अजय शेठे कोल्हापुर एवं तृतीय पुरस्कार कु. नीपा कोटड़िया भायंदर-मुम्बई ने तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम पुरस्कार निशा जैन जबलपुर, द्वितीय पुरस्कार निधी जैन टीकमगढ़ एवं तृतीय पुरस्कार संभव जैन नैनधरा ने प्राप्त किया।

प्रसन्न अजय शेठे, परमागम जैन, अंकित जैन एवं नीपा कोटड़िया

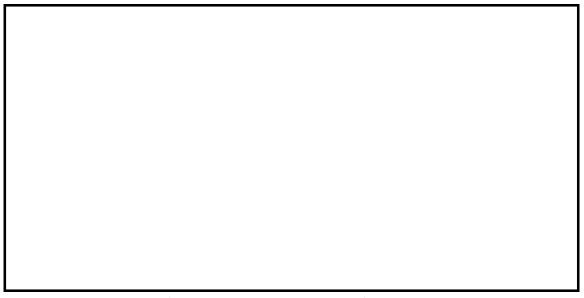

निधि जैन टीकमगढ़ एवं निशा जैन जबलपुर

ज्ञातव्य है कि दिनांक 11 मई को श्री अजितकुमारजी तोतूका जयपुर की अध्यक्षता में शिविर का उद्घाटन श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर ने किया। मुख्यअतिथि श्री नवरतनमलजी रांका थे। इससे पूर्व श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर परिवार ने झण्डारोहण किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी जैन अजमेर, श्री पृथ्वीचन्दजी दिल्ली, श्री सुशीलकुमारजी कोलकाता, श्री शांतिनाथजी सोनाज व श्री चन्द्रकान्तजी सोनाज, श्री विनोदजी अरिदमनलालजी कोटा उपस्थित थे।

(शेष पृष्ठ 4 पर .....)

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा

31

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

चारुदत्त ने आप बीती सुनाते हुए आगे कहा ह्न भाग्यवश एक काष्ठ का तख्ता पाकर मैं बड़े कष्ट से समुद्र पार कर जब राजपुर नगर आया और वहाँ एक सन्यासी वेषधारी दुष्ट पुरुष से भेंट हो गई। पहले तो वह मुझे रसायन का लोभ देकर एक सघन अटवी में ले गया। मैं उसकी चालाकी भरी चाल को समझ न सका। उसने एक तूमड़ी देकर मुझे रस्सी के सहारे एक कुएँ में उतारा। नीचे पहुँचकर जब मैं तूम्बी में रसायन भरने लगा, तब पहले से ही वहाँ पड़े एक पुरुष ने मुझे सावधान किया। उसने कहा कि हे भद्र ! यदि तू जीवित रहना चाहता है तो इस भयंकर रसपान को हाथ मत लगाना, अन्यथा इसके छूते ही तू मरणासन्न हो जायेगा।

मैंने उससे पूछा – आप कौन हैं ? और यहाँ इस हालत में तुम्हें किसने पहुँचाया ?

वह बोला ह्न मैं उज्जैनी का एक वणिक हूँ ? मेरा जहाज फट गया था। मुझे एक साधूवेषधारी व्यक्ति ने इसी रसायन के लालच के चक्कर में डालकर मेरी यह हालत कर दी।

रसपान प्राप्त करने के लोभ में वह यह विधि अपनाता है। उसने एक रस्सी में तूम्बी बाँधकर कुएँ में लटकाया और दूसरी रस्सी से मुझे कुएँ में उतार दिया। मैंने रसायन भरकर तैयार की तो उस सन्यासी ने रसायन की रस्सी तो खेंच ली और मेरी रस्सी काट दी। रसायन को मैंने भूल से चख लिया तभी से यहाँ पड़ा यह नारकी जीवन जी रहा हूँ और तिल-तिल गल-गल कर मर रहा हूँ; इसलिए मैंने तुम्हें सचेत किया है कि तुम रसायन को पीने की भूल मत करना, अन्यथा जो दशा मेरी हो रही है, वही हालत तुम्हारी हो जायेगी। देखो, उस सन्यासी ने तुम्हारी रस्सी भी काट दी है और तुम्हारे द्वारा रसभरी तूम्बी ऊपर खेंचकर उसका रस लेकर वह दुष्ट यहाँ से चला गया है।

अब मैं तुम्हें बाहर निकलने का उपाय बताता हूँ। एक गोह रसायन पीने आती है, जब वह वापिस ऊपर चढ़ने लगे तो तुम तुरंत उसकी पूँछ पकड़ लेना। इसतरह तुम इस मुसीबत से बच जाओगे। मुझे यह बात जब समझ में आई तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उस समय मैं पूँछ पकड़ने की स्थिति में नहीं रहा था।''

उस उज्जैनी के अंधकूप में पड़े मरणासन्न वणिक के द्वारा बताये उपाय से मैं (चारुदत्त) अपने प्राण बचाकर वहाँ से आगे बढ़ा तो मार्ग में उद्धत भैंसा एवं अजगर आदि अनेक उपद्रवों से उत्पन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए मैं एक गाँव में पहुँचा।

चारुदत्त ने आगे कहा ह्न काकतालीय न्याय से (अचानक) मैंने वहाँ काका रुद्रदत्त को देखा। मैं ह्न कई दिन का भूखा-प्यासा था, रुद्रदत्त ने मेरी खाने-पीने की व्यवस्था कर मुझसे कहा ह्न अब हम दोनों स्वर्णद्वीप चलकर वहाँ बहुत सारा धन कमाकर चम्पापुरी वापिस आवेंगे, जिससे अपने कुल की रक्षा हो सके। चारुदत्त काका रुद्रदत्त से सहमत होकर व्यापार के लिए वहाँ से चले और अनेक नदी पर्वतों को पार कर टंकण देश में पहुँचे। वहाँ से आगे का मार्ग बहुत विषम था; अतः दोनों ने दो ऐसे बकरे खरीदे, जो उस मार्ग को पार करने में सक्षम थे।

आगे बढ़े तो एक नई समस्या सामने आई। भूमि पर चलकर आगे जाने का मार्ग ही नहीं था। तब रुद्रदत्त ने चारुदत्त से ऐसा निर्दयतापूर्ण खोटा प्रस्ताव रखा, जो चारुदत्त की अन्तरात्मा को स्वीकृत नहीं हुआ फिर भी दुष्ट प्रकृति के रुद्रदत्त ने अपने और चारुदत्त के बकरे को मार कर उसके चमड़े से दो भाथड़ी बनाकर कहा कि हम दोनों इसमें बैठ जाँय तो थोड़ी देर में पैनी चोंचवाले भारुण्ड पक्षी आयेंगे और हमारी भाथड़ियों को ले जाकर सुवर्णद्वीप में छोड़ देंगे।

चारुदत्त बकरों के मारने को सहमत तो हुआ ही नहीं, प्रतिकार भी किया; किन्तु जब उसे रुद्रदत्त द्वारा बकरे मारे जाने का दृढ़-विश्वास हो गया अर्थात् चारुदत्त की समझ में यह बात आ गई कि ह्न रुद्रदत्त बकरों को मारे बिना मानेगा नहीं तो उसने मरणासन्न बकरों को णमोकार मंत्र सुनाया, फलस्वरूप बकरों के प्राण शान्त परिणामों से छूटे।

उन बकरों की खाल से बनी भाथड़ियों में एक में वह स्वयं बैठ गया, दूसरी में मुझे बैठा दिया। दोनों को लेकर दो भारुण्ड पक्षी ले उड़े। चारुदत्त ने कहा ह्न 'मेरी भाथड़ी एक काना भारुण्ड ले गया; अतः उसने मुझे स्वर्णद्वीप के बजाय रत्नद्वीप में ले जाकर छोड़ दिया। मैंने वहाँ रत्नों से देदीप्यमान स्वर्ग के समान एक बहुत सुन्दर द्वीप देखा। वहाँ जिनमन्दिर देखा। जिनमन्दिर के समीप एक चारण ऋद्धिधारी मुनिराज के दर्शन हुए उनके दर्शन कर मुझे अपूर्व आनन्दानुभूति हुई। मैंने जिनमन्दिर के दर्शन कर तीन प्रदक्षिणायें दीं। ध्यान का समय पूरा होने पर मुनिराज मुझे आशीर्वाद देकर मुझसे बोले ह्न हे चारुदत्त यहाँ तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? घर पर कुशल मंगल तो है।

मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा ह्न 'हे नाथ ! आपके प्रसाद से सर्वकुशल मंगल है।' किन्तु मैं जानना चाहता हूँ कि आप मेरा नाम कैसे जानते हैं। आपको मेरी पहचान कैसे हुई? मुझे तो ऐसा स्मरण ही नहीं आ रहा कि मैंने पहले भी आपके पावन दर्शन किए हैं? मैं तो आपके दर्शन को अपूर्व ही मानता हूँ।

मुनिराज ने उत्तर दिया ह्न मैं वहीं अमितगति नाम का विद्याधर हूँ, जिसे चम्पापुरी में शत्रु ने कील दिया था और तुमने छोड़ा था। उसी घटना ने मेरे हृदय में वैराग्य का भाव भर दिया था। फिर मुझे श्रुत के अवलम्बन से भेदज्ञान और आत्मानुभूति प्राप्त हो गई। मेरी विजयसेना से गान्धर्वसेना पुत्री और मनोरमा से सिंहयश और वारोह ग्रीव ह्न दो पुत्र हुए।

एक दिन मैंने बड़े पुत्र को राज्यपद एवं छोटे को युवराज पद देकर अपने पिता (जो मुझे राज्य देकर मुनि हो गये थे) से मुनि दीक्षा ले ली। **(क्रमशः)**

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

14

प्रभु ! तू अपने आप को भगवानरूप में देख तो तू भगवान होगा। निर्मल पर्याय से भी भिन्न जो भूतार्थ वस्तु है, उसे शुद्ध कहा जाता है। उस पर दृष्टि करने से सम्यग्दर्शन का उत्पाद और मिथ्यात्व का व्यय होगा। इसलिये शुद्ध वस्तु में जा - उसकी दृष्टि कर ! संयोग से भिन्न, दया-दान आदि के विकल्पों से भिन्न तथा एक समय की पर्याय से भी भिन्न वस्तु शुद्ध है। उसकी दृष्टि करने पर धर्म का प्रारंभ होता है। यह एक ही धर्म की रीति है, धर्म की कला है। अन्य लाखों प्रयत्न करने पर भी धर्म नहीं होगा।

परमपारिणामिक भाव लक्षण परमात्मा मैं ही हूँ, उसकी दृष्टि करने से जन्म-मरण का अन्त आयेगा। परवस्तु, राग एवं पर्याय की दृष्टि बहिर्मुख दृष्टि है। प्रभु ! तू कौन है, वह तुझे खबर नहीं है; इसलिये यहाँ कहते हैं कि जिसे धर्म करना हो, कल्याण के पथ पर आना हो, उसे सर्वप्रथम आत्मा को जानना चाहिये। मन्दिर में जाने एवं प्रतिष्ठा महोत्सव में जाने आदि के शुभभाव होते हैं; परन्तु वे धर्म के साधन नहीं है। प्रज्ञा छैनी ही वह साधन है, जिससे भेद-विज्ञान करके धर्म किया जा सकता है।

अहाहा ! अपनी ज्ञानपर्याय भी ज्ञायक के लिये पर ज्ञेय है। व्रत-तप आदि के विकल्प आत्मा नहीं है और आत्मा में वे नहीं है; परन्तु यहाँ तो कहते हैं कि खण्ड-खण्ड ज्ञान की पर्याय भी ज्ञायक से सर्वथा भिन्न है। खण्ड-खण्ड ज्ञान भी क्षयोपशम का अंश है, वह तेरी वस्तु नहीं है। प्रभु ! तू कौन है ? तू तो अखण्ड एकरूप चैतन्य वस्तु है, उसके द्वारा भावेन्द्रिय को सर्वथा भिन्न जान।

परद्रव्य तो आत्मस्वरूप है ही नहीं, राग भी तेरा स्वरूप नहीं है। निर्विकल्प मोक्षमार्ग की दशा भी तेरा वास्तविक स्वरूप नहीं है। वह तो उपचार से आत्मा का स्वरूप कहा जाता है। यहाँ तो दृष्टि का स्वरूप बतलाना है अर्थात् दृष्टि के विषय में पर्याय नहीं है - यह बतलाना है। दृष्टि का विषय सम्यग्दृष्टि नहीं है, दृष्टि का विषय तो पर्याय रहित द्रव्य है; तथापि निश्चय मोक्षमार्ग साधन होने से उसे सद्भूत व्यवहारनय से जीव का स्वरूप कहा जाता है।

स्वभाव से एकत्व तथा रागादि विभाव से विभक्त - ऐसे इस ज्ञायक भगवान को मैं शुद्धात्मस्पर्शी निज वैभव द्वारा बतलाता हूँ, यदि मैं बतलाऊँ तो तुम अपने स्वानुभव प्रत्यक्ष द्वारा परीक्षा करके उसका स्वीकार करना। अहा ! पंचमकाल के संत - पंचमकाल के श्रोताओं से कहते हैं कि प्रभु ! ज्ञानानन्द के रस से भरपूर ज्ञायक वस्तु भीतर विद्यमान है न ! जागता जीव अन्तर में विद्यमान है, वह कहाँ जायेगा ? वह तो तुझे सहज ही उपलब्ध है। उस सहज एवं सुगम स्वरूप को अन्तरंग वैभव से दर्शाता हूँ, उसे तू अपने अनुभव प्रत्यक्ष से प्रमाण करना।

एक त्रैकालिक ध्रुव को जाने बिना जीव जबतक व्यवहार में लीन है, तबतक उसका परिभ्रमण नहीं मिटता। जो त्रैकालिक वस्तु है, उसमें तो एक समय की पर्याय भी नहीं है। जो भेद में और विकल्प में रुकेगा उस जीव को तबतक आत्मा पकड़ में अर्थात् ज्ञान में नहीं आयेगा। प्रभु ! एकबार सब छोड़कर निर्विकल्प तत्त्व को देख ! अवसर चला जायेगा तो फिर कब प्राप्त होगा नाथ ? इसलिये जो पर्याय की चलती हुई धारा है, उसकी दृष्टि छोड़कर उसके पीछे जो त्रैकालिक भगवान विद्यमान है, उसकी दृष्टि करने योग्य है।

तात्पर्य यह है कि पर्याय रहित भगवान आत्मा उपादेय है। सिद्ध समान अर्थात् त्रैकालिक शुद्ध - ऐसा निजात्मा उपादेय है; परन्तु किसे उपादेय है कि जिसने अनुभूति द्वारा उपादेय बनाया है, उसे उपादेय है। यों ही उपादेय-उपादेय करे, धारणा में रखे - उसे आत्मा उपादेय नहीं है।

निज भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्यघन वस्तु स्वयं ही अपने को उपादेय है। निश्चय से तो मोक्ष की पर्याय भी आश्रय करनेयोग्य नहीं है। संवर-निर्जरा की (स्वानुभूति की) पर्याय भी हेय है। द्रव्य - द्रव्य से प्रकाशित नहीं होता; क्योंकि वह ध्रुव है। द्रव्य तो स्वानुभूति की पर्याय द्वारा प्रकाशित होता है; परन्तु जब वह पर्याय ध्रुव का आश्रय लेती है, तब वस्तु पर्याय में प्रकाशित होती है।

पर की अपेक्षा से पर्याय रहित द्रव्य नहीं है; परन्तु स्व की अपेक्षा से पर्याय रहित द्रव्य है। पर्याय और द्रव्य दो भिन्न सत्तायें है। वास्तव में पर्याय को द्रव्य स्पर्श नहीं करता, व्यक्त को अव्यक्त स्पर्श नहीं करता - ऐसे भगवान को लक्ष्य में लेनेवाली पर्याय भी वस्तु में नहीं आती।

शंका - रागादि की तथा ज्ञान की उत्पत्ति एक ही क्षेत्र में तथा एक ही समय में होने के कारण उन दोनों की भिन्नता किसप्रकार है ?

समाधान - जिस काल में और जिस क्षेत्र में रागादि की उत्पत्ति होती है, उसीकाल और उसी क्षेत्र में ज्ञान की उत्पत्ति होने के कारण अज्ञानी को भ्रम से वे दोनों एक समान भासित होती हैं; किन्तु उन दोनों के स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं, एक नहीं है। बंध का लक्षण रागादि हैं और चैतन्य का लक्षण ज्ञान है - इसप्रकार दोनों के लक्षण भिन्न-भिन्न हैं। रागादि का चैतन्य के साथ एक ही काल में और एक ही क्षेत्र में उपजना होता है, वह चेत्य-चेतक अर्थात् ज्ञेय-ज्ञायक भाव की अति निकटता से होता है; परन्तु एक द्रव्यपने के कारण नहीं होता। जैसे प्रकाशित होनेवाले घट-पटादि पदार्थ दीपक के प्रकाशपने को प्रकट करते हैं। घट-पटादि को नहीं। उसीप्रकार जानने में आनेवाले रागादिभाव आत्मा की ज्ञायकता को ही प्रसिद्ध करते हैं, रागादिक को नहीं; क्योंकि दीपक का प्रकाश दीपक से तन्मय है; इसलिये प्रकाश दीपक की प्रसिद्धि करता है। उसीप्रकार ज्ञान आत्मा से तन्मय होने के कारण आत्मा को प्रकाशित अर्थात् प्रकाशित करता है, रागादि को नहीं।

(पृष्ठ 1 का शेष .....)

रात्रि की व्याख्यानमाला में ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित दिनेशभाई शहा, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित जयकुमारजी बारां, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित केशवरावजी नागपुर के प्रवचन हुये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में पण्डित शिखरचन्दजी शास्त्री, डॉ. श्रेयांसकुमारजी शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित सुनीलकुमारजी प्रतापगढ़, पण्डित कीर्तिजयजी गोरे, पण्डित गुलाबचन्दजी भोपाल, पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजयकुमारजी सेठी, पण्डित भागचन्दजी शास्त्री, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित शीतल दोशी नातेपूते के विविध विषयों पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रशिक्षण व अभ्यास कक्षायें – डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा द्वारा बालबोध और प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कक्षायें ली गईं ।

दोपहर 1 से 2.30 बजे तक सर्वश्री पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जयपुर, पण्डित कीर्तिजयजी गोरे शास्त्री, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, श्रीमती लता जैन, श्रीमती रंजना बंसल, श्रीमती राजकुमारी जैन, श्रीमती निशी जैन, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, पण्डित शिखरचन्दजी शास्त्री, पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित ज्ञानचन्दजी शास्त्री, पण्डित भागचन्दजी शास्त्री आदि पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों ने प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास कक्षायें लीं।

प्रौढ़ व बाल कक्षायें – प्रौढ़ कक्षाओं में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा नाटक समयसार, डॉ. उज्जवलाबेन शहा द्वारा पंचलब्धि, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा छहढाला, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा परमभाव प्रकाशक नयचक्र, पं. दिनेशभाई शहा द्वारा लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका विषय पर कक्षायें चलाई गईं। इनके अतिरिक्त डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया के निर्देशन में दस विद्वानों ने बालकक्षायें भी लीं।

क्रमबद्धपर्याय गोष्ठी का आयोजन – दिनांक 18 मई से 21 मई तक चार दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन तीन-तीन वक्ताओं ने 15-15 मिनिट क्रमबद्ध पर्याय के विविध विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रतिदिन क्रमशः पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं प्रो. बीना अग्रवाल-राज.संस्कृत विश्वविद्यालय ने की।

वक्ताओं में प्रो.संजयकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रकुमारजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रकुमार राठी, पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री, पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, पण्डित कीर्तिजयजी शास्त्री, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित सतीशजी शास्त्री, पण्डित भागचन्दजी शास्त्री, पण्डित दिनेशभाई शहा थे।

गोष्ठी का संचालन पण्डित अमोलजी शास्त्री एवं पण्डित अनंतजी शास्त्री द्वारा किया गया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं पाठशाला समिति का अधिवेशन – दिनांक 25 मई को आयोजित इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोककुमारजी जैन सुभाष ट्रांस्पोर्ट, श्री जगनमलजी सेठी इम्फालवाले, श्री विजयकुमारजी बड़जात्या इन्दौर, श्री शम्भूकुमारजी जैन आदर्शनगर मंचासीन थे। अधिवेशन का उद्घाटन श्री आर. के. जैन साकेतनगर, इन्दौर ने किया। इस अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने ट्रस्ट एवं पाठशाला समिति का परिचय दिया। सभा का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने किया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन व दीक्षान्त समारोह – दिनांक 27 मई को प्रशिक्षणार्थियों का सम्मेलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री डालचन्दजी जैन (पूर्व सांसद) सागर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचन्दजी जैन सागर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेशकुमारजी सेठी, श्री राजकुमारजी काला एवं श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी उपस्थित थे।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शैलेषभाई तलोद आदि अनेक विशिष्ट विद्वान एवं सभी प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे। अनेक नवप्रशिक्षित छात्रों ने अपने-अपने गृहनगर जाकर नवीन पाठशालायें खोलने की मंशा जाहिर की।

रात्रि में दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महीपाल धनपालजी बांसवाड़ा एवं श्री मोहनलालजी सेठी उपस्थित थे। पुरस्कार वितरणकर्त्ता श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा थे। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने बहुत ही मार्मिक दीक्षांत भाषण दिया। सभा का संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

शिविर के अवसर पर 1 लाख 24 हजार 50 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा एवं 9 हजार 200 रुपये के प्रवचनों के कैसिट व सी. डी. बिकीं। वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक सदस्य बने। सम्पूर्ण आयोजन में 1132 आत्मार्थी बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया।

उपकार दिवस सानन्द सम्पन्न

दिल्ली : श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट द्वारा आयोजित गुरुदेव श्री कानजीस्वामी का 114 वाँ जन्मजयन्ती समारोह 'आत्म साधना केन्द्र' दिल्ली में रविवार, 27 अप्रेल को अनेकानेक गणमान्य अतिथियों एवं विशाल जनसमूह की उपस्थिति में बाल. ब्र. जतीशचंदजी के कुशल निर्देशन में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी ने कहा कि श्री कानजी स्वामी ने शास्त्र सम्मत आत्मकल्याण का जो मार्ग बताया उसके लिए जैनसमाज उनका चिरऋणी रहेगा।

सभा की अध्यक्षता श्री त्रिलोकचंदजी जैन भारत नगर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. साहिबसिंह वर्मा (केन्द्रिय श्रम मंत्री भारत सरकार) ने संस्था द्वारा संचालित सामाजिक गतिविधियों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए इस सम्पूर्ण क्षेत्र को मद्य-मांस निषिद्ध क्षेत्र घोषित करवाने का वायदा किया।

समारोह में अनेकों विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। सभा का कुशल संचालन श्री राकेश जैन शास्त्री ने किया। **– आदीश जैन, मंत्री**

श्री ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन पाठशाला, सोलापुर द्वारा संचालित

वालचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी (स्थापित - 1983)

(जैन अल्पसंख्यक इंजीनियरिंग कॉलेज)

सेठ वालचन्द हीराचन्द मार्ग, अशोक चौक, सोलापुर - 413006 (महा.)

फोन - (0217) 2653040, 2651388, फैक्स - (0217) 2651538

ए. आई. सी. टी. ई., नई दिल्ली एवं शिवाजी यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर द्वारा मान्यता प्राप्त

इंजीनियरिंग डिग्री कॉलेज

1. कम्प्यूटर साइन्स एण्ड इंजीनियरिंग
2. इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी
3. इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग
4. इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड टेलीकम्यूनिकेशन
5. मैकेनिकल इंजीनियरिंग
6. प्रॉडक्शन इंजीनियरिंग
7. सिविल इंजीनियरिंग

उपरोक्त विषयों में अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिये प्रवेश प्रारंभ हो चुका है। ज्ञातव्य है कि कॉलेज में जैन छात्रों के लिये 50 प्रतिशत सीटें विशेषरूप से आरक्षित की गई हैं।

अधिक जानकारी के लिये हमारी बेबसाईट www.witsolapur.org देखिये।

शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

दाहोद : श्री दिगम्बर जैन नवामन्दिर परिवार द्वारा गुरुदेवश्री की 114वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर 1 मई से 10 मई 2003 तक प्रथम आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित वरुणकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। प्रतिदिन पूजन के पश्चात् 'कहान क्रमबद्ध कथा' वी. सी. डी. चलाई। शिविर का उद्घाटन श्री महेन्द्रभाई सर्राफ परिवार ने किया।

शिविर में 180 बच्चों सहित 300 लोगों ने भाग लिया। प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **- राकेश शास्त्री**

आठवीं तक के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति

सामाजिक उत्थान के लिए दृढ़ संकल्पित संस्था 'सर्वोदय ज्ञानपीठ' जबलपुर ने वर्ष 2003-2004 में जैन समाज के अध्ययनरत आठवीं तक के छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की घोषणा की है। छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु 15 जून तक आवेदन-पत्र मंगाकर 30 जून तक जमा करना होगा।

इच्छित छात्र-छात्रायें आवेदन-पत्र मंगाने के लिए 9''ह्न 4'' का 5/- रूपये टिकिट लगा हुआ एवं स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा निम्न पते पर भेजें- **विराग जैन, सचिव सर्वोदय ज्ञानपीठ,**

702, जैन टेलीकाम, फूटाताल, जबलपुर-482002 (म. प्र.)

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी की 144 वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर 'कानजी स्वामी एवं उनकी आध्यात्मिक क्रान्ति' विषय पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया गया है। परिणाम इसप्रकार है : प्रथमस्थान - सीमा जैन उदयपुर (राज.), द्वितीयस्थान - सुरेन्द्रकुमार जैन उज्जैन (म.प्र.) एवं तृतीयस्थान - उर्वशी विजय वोटाडरा घाटकोपर (मुंबई)।

सांत्वना पुरस्कार के रूप में 1. जितेन्द्र यादव वानपुर (उ.प्र.), 2. शोभनाबेन जबेरचंद छेड़ा, राजकोट, 3. श्रीमती कान्ता जैन लालोनी (म.प्र.), 4. बीना चेतना मेहता राजकोट, 5. भूमिका मेहता राजकोट।

- संयोजक, मनीष शास्त्री रहली

धर्म प्रभावना

कोलारस (म. प्र.): मुमुक्षु मण्डल कोलारस एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा कोलारस द्वारा श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में 27 अप्रैल से 3 मई 2003 तक अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर ब्र. कल्पनाबेन जयपुर के प्रतिदिन तीनों समय छहढाला, समयसार एवं मोक्षमार्ग-प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुए। साथ ही श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के विद्यार्थियों द्वारा बालकक्षा एवं प्रौढ़कक्षा चलाई गई। जिसमें सैकड़ों बच्चों एवं आत्मार्थियों ने लाभ लिया।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार

68

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

जब लोग हमारे पास आते हैं और कहते हैं कि पंडितजी यह मकान आपका ही है और ये बाल बच्चे भी आपके ही हैं; तब ऐसा भ्रम हमें आज तक नहीं हुआ कि हमारा दिल्ली में भी एक मकान है। हम उस मकान को अपना मानकर ऐसा नहीं कहते कि भाईसाहब ! यह मकान हमारा है तो इसे खाली कर दीजिए, हम इसमें ताला लगाकर जायेंगे।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि यह कहना तो मात्र व्यवहार है। यदि हम सचमुच ऐसा मानने लग जाय तो फिर हमारा व्यवहार भी झूठा और निश्चय भी झूठा है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि कौआ के कोसे ढोर नहीं मरते और अम्मा के आशीर्वाद से कोई पास नहीं होता। अपनी–अपनी योग्यता और अपनी मेहनत से ही सबकुछ होता है; क्योंकि दो द्रव्यों के बीच में वज्र की दीवार खड़ी है।

जब मेरे करने से परद्रव्य में कुछ होता ही नहीं तो उसके कारण मुझे बंध भी क्यों हो ? वह हमारे कारण मरा ही नहीं, फिर हमें बंध क्यों हो ? अरे भाई ! जो बंध हुआ है, वह तो रागादिभाव के कारण हुआ है।

यदि ऐसा है तो शास्त्रों में ऐसा क्यों लिखा है कि किसी जीव को मत मारो। अरे भाई ! यह तो भाषा है, उसका वास्तविक अर्थ है कि मारने का भाव मत करो; क्योंकि मारने की क्रिया मारने के भाव के बिना नहीं होती।

इसलिए अगले कलश में लिखा है कि तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिनां – फिर भी ज्ञानी जीव को अनर्गल प्रवृत्ति नहीं करनी चाहिए; क्योंकि जो क्रिया होती है, वह भावपूर्वक ही होती है और अज्ञानी की क्रिया तो विपरीत मान्यतापूर्वक ही होती है।

इसलिए मान्यता और भाव बंध के कारण हैं, क्रिया रंचमात्र भी बंध का कारण नहीं है।

यह बंध अधिकार है। बंध का असली कारण क्या है ? इसकी खोज का अधिकार है। इसलिए ऐसा कहा कि बाहर की क्रिया–कलाप से आत्मा को बंध नहीं होता; बंध तो अपने परिणामों से होता है; इसलिए जीव को अपने परिणाम सुधारना चाहिए।

बीसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम की चर्चा चल रही है, जिसमें बंधाधिकार में हमने यह चर्चा की कि बंध का मुख्य कारण न तो कार्माण वर्गणाएँ हैं, न ही मन, वचन, काय की चंचलता; यहाँ तक कि चेतन–अचेतन की हिंसा भी बंध का कारण नहीं है।

हिंसा को सारी दुनिया में महापाप माना जाता है। अहिंसा परमो धर्मः तो जैनदर्शन का मूल सिद्धान्त है; किन्तु समयसारजी में कहा है कि चेतन और अचेतन की हिंसा भी बंध का कारण नहीं है और यहाँ तक कि इन्द्रियों के विषयभोग भी बंध के कारण नहीं हैं। बंध का कारण यदि कोई है तो वह एक मात्र रागादि विकारी भाव हैं, मिथ्यात्व है, अज्ञान है, अंसयम है।

दूसरी मुख्य बात यह कही कि जो कर्म का बंध होता है, उसमें सबसे बड़ा हिस्सा मिथ्या मान्यता का होता है, दूसरा हिस्सा शुभाशुभ भावों का होता है; जड़ की क्रिया से तो बंध और मोक्ष का कोई संबंध ही नहीं है।

परमसत्य बात यह है कि एक जीव दूसरे जीव को मार और जिला ही नहीं सकता है और सुखी–दुःखी भी नहीं कर सकता है। इस बंध अधिकार में 25–30 गाथाओं के लम्बे प्रकरण में करणानुयोग का आधार देकर यह बात सिद्ध करने का सफल प्रयास किया गया है।

प्रत्येक जीव अपने आयुकर्म के उदय के अनुसार ही जिन्दा रहता है और आयुकर्म के क्षय होने पर मरता है। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को आयुकर्म दे नहीं सकता है तब वह उसे कैसे मार सकता है और कैसे जिला सकता है।

यही सिद्धान्त सुख–दुःख के संबंध में भी समझना चाहिए कि जब प्रत्येक जीव अपने असाता कर्म के उदय से दुखी होता है और साता कर्म के उदय से सुखी होता है और तुम किसी को साता और असाता कर्म दे नहीं सकते तो उसके सुख–दुःख के देनेवाले तुम कैसे हो सकते हो ?

यह एक महान सिद्धान्त है। यदि इसके बारे में हम गहराई से विचार करें तो हमारे जीवन में सुख और शांति आ सकती है।

हमारी यह मान्यता है कि कोई मुझे मार न दे, कोई मुझे दुखी न कर दे; इससे हम निरन्तर भयाक्रान्त रहते हैं तथा मैं दूसरों को सुखी–दुखी कर सकता हूँ, मार सकता हूँ – ऐसी श्रद्धा के कारण दूसरों को दबाकर उन्हें अपने कब्जे में रखने के विकल्प में उलझे रहते हैं। इसलिए हम दुःखी हैं।

जगत में सुरक्षा के नाम पर जितने भी शस्त्रों का निर्माण हो रहा है; वह सब इसी मूल मान्यता के आधार पर ही हो रहा है कि मुझे अपनी सुरक्षा का इंतजाम करना है। अरे भाई ! हथियार किसी की मृत्यु का कारण तो हो सकते हैं, रक्षा का नहीं; लेकिन हम उनका निर्माण रक्षा के नाम पर करते हैं।

हिन्दुस्तान की एक बड़ी विशेषता यह है कि खोटे काम के अच्छे नाम रखना जितना हिन्दुस्तानी जानते हैं, उतना और कोई नहीं जानता है।

मछलियों को मारने का धंधा करते हैं और नाम रखते हैं मत्स्यपालन उद्योग। काम करते हैं मारने का, खाने का और नाम रखते हैं पालने का। इसीप्रकार चूहे मारने की दवा। अरे भाई ! दवा तो उसे कहते हैं, जो बचाने का काम करे। क्या मारने की भी कोई दवाई हो सकती है ?

मेरे कहने का आशय यह है कि हमने अपनी सुरक्षा के

नाम पर जो हथियार बनाए हैं, वे हमारी मौत के पैगाम बन गये हैं। जो मारने के काम आते हैं, उन्हें हम बचाने के नाम पर बनाते हैं। कोई हमें मार न दे, बस इसके लिए ये सारा इन्तजाम है।

पर भाई साहब ! मैं आपसे ही पूछता हूँ कि आपको कोई नहीं मारे पर, आप स्वयं भी तो बीमार होकर मर सकते हैं।

इसपर वे कहते हैं कि हमने उसका भी इंतजाम किया है एन्टीवायोटिक्स दवाईयाँ बनाकर।

एन्टीवायोटिक्स का हिन्दी अनुवाद है जीवनरक्षक दवा। वास्तव में तो वह कीटाणुनाशक है; किन्तु हमने जीवन– रक्षक नाम दिया। अंग्रेजों ने तो ईमानदारी से उसका नाम एन्टीवायोटिक्स अर्थात् कीटाणुओं के विरुद्ध ही रखा था।

दूसरे हमें न मार दें – इसके लिए हमने अणुबम्ब बनाये और अपने आप न मर जाय – इसके लिए हमने एन्टीवायोटिक्स दवाईयाँ बनाईं।

ऐसा ही सुख–दुःख के सन्दर्भ में भी समझना। यदि कोई किसी को बचा सकता होता तो हमारे बाप दादा भी अभी तक जिन्दा होते; किन्तु आज वे नहीं हैं।

यदि कोई कहे कि पहले ये दवाईयाँ नहीं थीं, इसलिए वे नहीं बच सके। उनसे मैं कहता हूँ कि अब हम तो अगली सात पीढ़ी तक रहेंगे न ! क्या इसकी कोई गारंटी है ?

लोग कहते हैं कि न सही मृत्यु से बचाव; पर कम से कम दुःख तो नहीं हो। उसके लिए हमने दर्दनाशक व दुःखनिवारक दवाईयाँ बनाईं हैं।

इस तरह कोई हमें दुखी न कर दे, मार न दे और हम स्वयं न मर जाय – इस लक्ष्य से ही हमने सारा इंतजाम किया है।

इस बंधाधिकार में आचार्यदेव कहते हैं जब कोई किसी को मार ही नहीं सकता है, बचा ही नहीं सकता है तथा उसे सुखी–दुखी कर ही नहीं सकता है; तब फिर क्या कारण रह जाता है कि हम यह माने कि हम इससे बच सकते हैं और इससे दुःखी–सुखी हो सकते हैं।

अज्झवसिदेण बंधो सत्ते मारेउ मा व मारेउ।
एसो बंधसमासो जीवाणं णिच्छयणयस्स।।262।।
वत्थुं पडुच्च जं पुण अज्झवसाणं तु होदि जीवाणं।
ण य वत्थुदो दु बंधो अज्झवसाणेण बंधोत्थि।।265।।

(हरिगीत)

मारो न मारो जीव को हो बंध अध्यवसान से।
यह बंध का संक्षेप है तुम जान लो परमार्थ से।।262।।
ये भाव अध्यवसान होते वस्तु के अवलम्ब से।
परवस्तु से ना बंध हो हो बंध अध्यवसान से।।265।।

बंध का संबंध अध्यवसान भावों से है, जीवों के मरने या न मरने से नहीं। यह निश्चय से बंध का संक्षेप है।

यद्यपि यह सत्य है कि वस्तु को लक्ष्य करके अध्यवसान भाव होते हैं, लेकिन उससे बड़ा परमसत्य यह है कि बंध अध्यवसान भावों से होता है, वस्तु से नहीं।

उपर्युक्त दोनों गाथाएँ बंध अधिकार के केन्द्रीय विचार को बतानेवाली गाथाएँ हैं।

कोई कहता है कि यदि अध्यवसान भावों से बंध होता है तो तुम अध्यवसान भावों के त्याग करने की बात कहो, मारने के त्याग की बात क्यों कहते हो, तुम वासनाओं के त्याग करने की बात क्यों कहते हो ? यह कहो कि मारने का भाव मत करो, यह क्यों कहते हो कि किसी को मारो मत। किसी को दुखी करने का भाव मत करो, यह कहो यह क्यों कहते हो कि किसी को दुखी मत करो, क्योंकि जब तुम ऐसा कहते हो कि किसी को मारो मत, दुखी मत करो, तो हमें ऐसा लगता है कि जैसे हम मार सकते हैं। उसमें मारो मत वाली बात तो हमारी समझ में नहीं आती है, लेकिन उसमें ऐसा लगता है कि हम मार सकते हैं।

मान लो, मैं किसी के पास जाऊँ और कहूँ कि साहब इस कागज पर साइन कर दीजिए तो वह एकदम से अकड़ जाता है।

उसके यह पूछने पर कि यह क्या है ? हम कहें कि अरे ! कुछ नहीं। यहाँ की सफाई ढंग से हो, इसके लिए म्युनिसिपल्टी में एप्लीकेशन दे रहे हैं और भीड़ के साइन कराना है। आप करोगे तो ठीक है और नहीं करोगे तो भी कोई बात नहीं।

तब वे कहते हैं कि ऐसी बात है तो लाओ, कर देते हैं।

यदि उनसे यह कहा जाय कि आप साइन नहीं करोगे तो हो सकता है कि मेरे को फांसी लग जाय। तो वे कहेंगे कि इतनी बड़ी बात है मेरे साइन नहीं करने पर फांसी लग सकती है और करने पर बच सकते हो ?

यह जानते ही वे भगवान बन जायेंगे और कहेंगे कि – आखिर मेरी भी जिम्मेदारी है, मुझे भी तो कुछ समझना पड़ेगा। अन्ततोगत्वा सारी जिन्दगी गुलाम बनाने की कीमत पर वह साईन करेगा। उसे बस इतना पता लग जाना चाहिए कि उसके साईन के बिना हमारा कुछ काम अटक सकता है; फिर देखो, उसके तेवर !

शास्त्रों में कहा कि मारो मत तो उसने नहीं मारने का संदेश तो नहीं लिया, बल्कि यह ग्रहण किया कि मैं मार भी सकता हूँ।

अरे भाई ! कोई जीव किसी को मार ही नहीं सकता है तो वे कहते हैं कि तुमने ऐसा क्यों कहा कि मारो मत।

अरे ! जिनवाणी में जो ऐसा लिखा है कि तुम मारो मत – इसका आशय तो यह है कि तुम मारने का भाव मत करो, इससे तुम्हें कर्मबंध होगा, तुम नरक में जाओगे।

(क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

दिग. जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी बड़जात्या

दिगम्बर जैन समाज की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था दिगम्बर जैन महासमिति (जैन संसद) के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेतु आयोजित चुनाव में इन्दौर के श्री अशोककुमारजी बड़जात्या निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये।

श्री बड़जात्याजी की इस गौरवमयी उपलब्धि पर श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार की ओर से 25 मई को सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

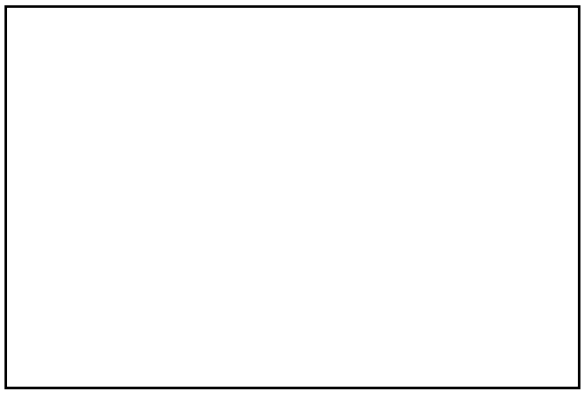

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल श्री अशोकजी बड़जात्या को श्रीफल भेंट करते हुये

सर्वप्रथम पण्डित शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने श्री अशोककुमारजी बड़जात्या का परिचय दिया।

श्री बड़जात्याजी को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रजत श्रीफल, श्री सुशीलजी गोदीका द्वारा शाल एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा द्वारा त्रिमूर्ति प्रतीक भेंट कर सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त कर्नाटक, तमिलनाडू, ललितपुर, भोपाल, इन्दौर, सूरत, भीलवाड़ा, हरिद्वार, बांसवाड़ा, नागपुर, गोहाटी, मिरज, अमलाई, जयपुर, मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, छत्तीसगढ़, कोल्हापुर आदि सम्पूर्ण भारत के अनेकों नगरों से पधारे प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में बड़जात्याजी को शुभाशीष देते हुये उनके कार्यों की सराहना की एवं भविष्य में न्याय एवं नीति मार्ग पर चलते हुये सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों को करने की प्रेरणा दी।

ज्ञातव्य है कि श्री बड़जात्या दि. जैन सोशल ग्रुप फैडरेशन (समस्त भारत के 108 ग्रुपों के 7500 दम्पत्ति सदस्यों की संस्था) के भी राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। महासमिति पत्रिका (पाक्षिक) के प्रधान सम्पादक, दि. जैन सोशल ग्रुप इन्दौर मेन के संस्थापक अध्यक्ष, श्री आदिनाथ आध्यात्मिक अहिंसा फाउंडेशन बद्रीनाथ (उ.प्र.) के ट्रस्टी, अतिशय क्षेत्र मक्सी के उपाध्यक्ष, श्री श्रीपाल बड़जात्या चेरिटेबल ट्रस्ट के चेअरमेन, महावीर ट्रस्ट मध्यप्रदेश एवं श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के सचिव, दिगम्बर जैन मैरिज ब्यूरो एवं मध्यप्रदेश फीड मेन्युफैक्चरर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष भी हैं।

गुरुदेवश्री की जन्म-जयन्ती सम्पन्न

गुना (म. प्र.): यहाँ देवाधिदेव भगवान कुन्थुनाथजी का जन्म, तप एवं निर्वाण कल्याणक तथा स्वामीजी की 114 वीं जन्म-जयन्ती अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुई।

इसी अवसर पर दिनांक 2 मई 03 को भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ तथा अरनाथ का मस्तकाभिषेक एवं पंचकल्याणक विधान सम्पन्न हुआ। दिनांक 3 मई को पूज्य कानजी स्वामी की जन्मजयन्ती पण्डित बाबूलाल पल्लीवाल की अध्यक्षता एवं पण्डित अरूणकुमार जैन अशोकनगर के मुख्य आतिथ्य में मनाई गई। दोपहर में स्वामीजी का जीवनवृत्त कम्प्यूटर सी. डी. द्वारा दिखाया गया। कार्यक्रम में पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, पण्डित मांगीलालजी नीमखेड़ी एवं पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा। **- बाबूलाल बांझल**

शोक-संदेश

1. मुम्बई निवासी श्री उम्मेदमलजी बड़जात्या का दिनांक 20 मई 2003 को देहावसान हो गया है। आप जीवनभर पूज्य गुरुदेवश्री से प्राप्त विशुद्ध तत्त्वज्ञान की धारा से जुड़े रहे। जयपुर शिविरों में भी सदैव आया करते थे। आपकी स्मृति में दिनांक 25 मई को रात्रि में श्री टोडरमल स्मारक भवन में शोक सभा का आयोजन किया गया।

2. सोनगढ़ निवासी श्री खेमराजजी गिड़िया खैरागढ़ का अप्रैल माह में आकस्मिक निधन हो गया है। आपने 34 वर्ष की आयु से आजीवन ब्रह्मचर्य लेकर अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म साधना में व्यतीत किया। आपने अपने पूरे परिवार को धार्मिक संस्कार दिये। आपका पोता एवं परपोता श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में वर्तमान में अध्ययनरत है।

आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक समिति को कुल 501/- प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **जून (प्रथम) 2003**
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127